सतत बकरी पालन से आजिविका विकास परियोजना

समेकित प्रतिवेदन 2011–2014

संचालन
सवेरा संस्थान, कानपुरा,
श्रीनगर(अजमेर)

वितीय सहयोग
सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट,मुम्बई

अध्याय 1

जिला दर्शन

अजमेर जिला पश्चिम भारत के राजस्थान प्रान्त के बीचों –बीच स्थित है। जो कि एक जिला मुख्यालय है। यह 8481 वर्ग किलोमीटर में फैला है।अजमेर के उत्तर में नागौर ,जयपुर पूर्व में टोंक ,दक्षिण में भीलवाडा एवं पश्चिम में पाली जिला स्थित है।जिला मुख्यालय पर्वतमाला से घिरा हुआ है, नजदीक ही तीर्थ नगरी पु"कर है, जिसे छोटी काशी के नाम से जाना जाता है ,यहॉ विश्व प्रसिद्ध ब्रह्माजी का मन्दिर स्थित है। शहर के बीचों – बीच स्थित भारत के मक्का के नाम से महसूर ख्वाजा शरीफ दरगाह है। यहॉ देश – विदेश के पर्यटक सांस्कृतिक झलक देखने आते है। यहॉ सभी धर्मों के लोग दर्शनार्थ आते जो साम्प्रदायिक सद्भावना कि मिशाल पेश करते है। अजमेर जिले से पश्चिम की और से राजस्थान एवं भारत का महसूर रेगिस्थान अवस्थित है। जो कि पाक सीमा तक फैला है।

अजमेर जिले में चार छोटी बरसाती नदियॉ बहती है – सागरमती , सरस्वति, खारी ,डाई ।

ब्लॉक दृश्य

श्रीनगर ब्लॉक अजमेर शहर के पूर्व में स्थित है तथा इसी सीमा सिलोरा, अरांई, नसीराबाद, भिनाई ब्लॉक से सटी हुई है। यह जिला मुख्यालय से महज 16 किलोमीटर कि दूरी पर स्थित है। अजमेर से श्रीनगर के लिए पर्याप्त परिवहन व्यवस्था है। ब्लॉक में कुल ग्राम पंचायत .....तथा .....राजस्व गॉव है। यहॉ मुख्य समस्या पीने के पानी कि है क्योंकि पानी में फ्लोराज्ड की मात्रा अधिक है हालांकि कुछ क्षेत्रों में बीसलपुरा पेयजल परियोजना से आपूर्ति होती है लेकिन न के बराबर ।

❖ सामाजिक सांस्कृतिक परिदृश्य

अलग–अलग क्षेत्र कि अलग–अलग विभिन्नताऐं होती है। यहॉं भी ढाणियों, गॉवों में अलग–अलग जातियों एवं धर्मों के लोग निवास करतें हैं। जिनमें हिन्दु धर्म मानने वाले लोगो की बाहुल्यता है। त्योंहार एक दूसरे को भाइचारे को बढावा देने वाला है – होली, रक्षाबंधन, दशहरा, दीपावली, ईद तेजादशमी आदि धूमधाम से मनाऐ जाते है। वेशभूषा में पुरूष धोती कुर्ता, साफा, पायजामा कुर्ता जूतियॉ एवं महिलाऐं लहंगा, लूगडी, ब्लाउज, सलवार सूट बाली, नथ, लौंग, चूडिया, बगडी, पूंची, बाजूबंद, झेला आदि पहनते है।

❖ आर्थिक परिदृश्य

इस क्षेत्र के लोगों कि आजिविका का मुख्य स्त्रोत कृषि एवं पशुपालन है। जिन लोगों के पास कृषि योग्य भूमि नहीं है वे मजदूरी करते है या पशुपालन। अधिकांश कृषि भूमि मानसून पर आधारित है। ऐसी स्थिति में अनिश्चित, अनियमित वर्षा के कारण प्रत्येक पॉच वर्ष में भयकंर अकाल का सामना करना पडता है। जिससे कृषि के साथ पशुपालन को भी चपेट लगती है।

अध्याय : 2 परियोजना एक नजर में..

संस्थान परिचय

सवेरा संस्थान (सोसियल वर्क एण्ड एनवायरमेंट फॉर रूरल डवलपमेंट) कानपुरा एक गैर सरकारी स्वयंसेवी संस्था है जो कि 1995 से ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, जेण्डर, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन एवं आजिविका विकास के लिए प्रयासरत है। संस्थान लगाातार ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों की आजिविका एवं प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन बेहतर करने के लिए कार्य कर रहा है। जिसमें खेतों कि मेडबंदी, जल संसाधन के लिए तालाब निर्माण, वृक्षारोपण आदि कार्य किये, जिससे लोगों कि आर्थिक स्थिति में इजाफा हुआ तथा साथ ही बेहतर मॉडल्स प्रस्तुत कियें। जिससे सरकार का ध्यान आकर्"ात किया गया। महिलाओं एवं बच्चों के अधिकारों पर काम किया गया, जिसमें बालिका शिक्षा, बालश्रम, स्वास्थ्य पर मुख्य फोकस किया गया, इसके साथ ही मातृ शिशु अस्पताल के माध्यम से लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक किया गया ।

वर्तमान में संस्थान द्वारा दो परियोजनाऐं संचालित कि जा रही है,पहली बालिका अधिकार हस्तक्षेप परियोजना जिसके अर्न्तगत ड्रॉपआउट बालिकाओं को स्कूल कि मुख्यधारा से जोडना, समाज में बढती जेण्डर वि"ाम को रोकना, महिलाओं एवं बालिकाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिए 10 गॉवों में काम किया जा रहा है। दूसरी सतत बकरी पालन से आजिविका विकास परियोजना के माध्यम से लोगों कि आजिविका सुदृढ करने का सफल प्रयास किया गया है।

परियोजना कैसे चली

इस पूरे सफर के बाद लगा कि व्यक्ति के विकास के लिए आर्थिक स्थिति ठीक होना आवश्यक है अतः जरूरत लगी कि लोगों कि स्थानीय संसाधनों का बेहतर प्रबंधन करके आर्थिक स्थिति सुदृढ की जा सकती है। इस मुहिम के लिए 10 गॉवों में सर्वे किया गया जिसमें निकलकर आया कि कुल 1363 बकरीपालक परिवारों में 8336 बकरियॉ पाली जा रही थी। परन्तु बेहतर प्रवंन्धन के अभाव में इस व्यवसाय से अधिक आय नहीं हो पाती थी। बकरीपालकों के लिए चारे कि समस्या प्रमुख थी साथ ही बेहतर प्रबंध एवं ट्रीटमेंट के अभाव में पालकों को आर्थिक हानि होती थी।

क्षेत्र में समस्या चिन्हित करने के बाद बकरी पालन को बेहतर व्यवसाय बनाने के उद्देश्य से सर्वे के आधार पर एक परियोजना प्रस्ताव तैयार करके सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट,मुम्बई को भेजा गया। प्रस्ताव में कुछ सुझावों को सामिल करते हुए स्वीकार किया गया ।क्षेत्र के सभी गॉवों में पशुसखी एवं परियोजना समन्वयक ,पेरावेट का चयन करके बेस लाइन सर्वे किया गया जिसकों आधार मानकर काम शुरू किया गया ।

प्रशिक्षण : चयनित परियोजना समन्वयक ,पेरावेट एवं पशुसखीयों की ....दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया । जिसमें परियोजना का आमुखीकरण किया गया ।

काम के मुख्य आयामः

- ✓ बकरी विकास
- ✓ कृषि एवं चारा विकास
- ✓ नरेगा जागरूकता कार्यक्रम

परियोजना के उद्देश्य

- ➢ नश्ल सुधार,संरक्षण व उचित प्रबंन्धन द्वारा बकरी पालकों कि आय बढाना।
- ➢ ऐसे संगठन का निर्माण करना जो आर्थिक रूप से स्वत अस्तित्व में रहे।
- ➢ पिछडे लोगों को ब्करी पालन द्वारा विश्वसनीय आजीविका से जोडकर सवंर्द्धित करके विकसित वर्ग के समान लाना।
- ➢ व्यक्तिगत एवं सामुदायिक स्तर पर चारा एवं चारागाह का विकास करना।
- ➢ गरीब परिवार कि महिलाओं व बच्चों के लिए पोषण हेतु दूध।
- ➢ नरेगा एवं अन्य संबन्धित योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन एवं जागरूकता उत्पन करना।

कार्यनीति :

परियोजना में कार्यक्रम समन्वयक द्वारा योजना बनाना , क्रियान्वयन करवाना ,मॉनिटरिग करना ,टीम क्षमतावर्द्धन करना, विभिन्न प्रशिक्षणों का आयोजन, रिपोर्ट लेखन आदि कार्य किया गया ।इस दौरान पेरावेट द्वारा समय समय पर प्शुसखियों को बकरी प्रबंधन कि जानकारी, बिमारियों एवं टीकाकरण की जानकारी ,दाना–चारा–पानी के संदर्भ में जानकारी दी गई। कृषि,पौधारौपण, एवं स्वयं सहायता समूह संगठन के बारे में बताया गया तथा मनरेगा क्रियान्वयन के लिए विभिन्न गतिविधियॉ आयोजित की गई।

ग्राम स्तर पर एक पशुसखी रखी गई ,जिसको एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा गया कि पशु कि साधारण बिमारी का उपचार कर पायें एवं लोगों को चारा पानी कें बारे

में जानकारी दे पायें।क्योंकि गावों में आमतौर डाक्टर नहीं होते तथा ऐसी स्थिति में कई पशु साधारण बिमारी के कारण मर जाते है या डा. की फीस अधिक होती है ।इसलिए पशुसखी को प्रशिक्षित किया गया जिससे कि गॉव में साधारण बिमारी का उपचार किया जा सके तथा बकरी पालकों को चारा प्रबंन्धन कि जाकारी दे सके ।

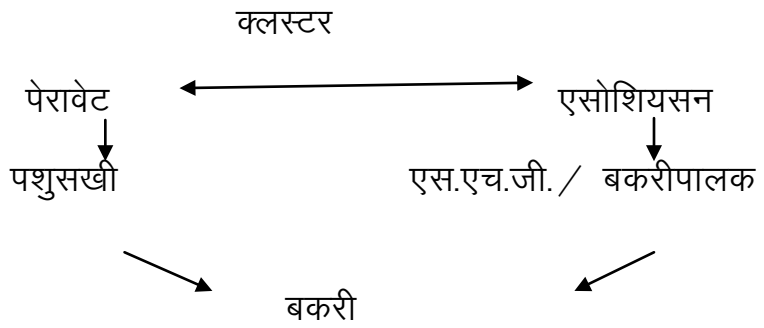

पशुसखी की भूमिका

इस परियोजना में "पशुसखी कम नरेगा सहायक" को महत्वपूर्ण भूमिका में देखा गया है।जैसा कि इस नाम से स्पष्ट होता है कि प्शुओं कि सखी और नरेगा में सहायता देने वाली अर्थात ऐसी महिला जो बकरियों का साधारण उपचार करने का कौशल और प्रबन्धन सम्बधि जानकारी रखे।साथ ही नरेगा क्रियान्वयन में अपनी भूमिका निभा सके । जब इस सदस्य का चुनाव किया गया ,तब गांव स्तर पर एक मिटिंग का आयोजन किया ,जिसमें पशुसखी की अवधारण स्पष्ट की गई। ग्राम स्तर पर चयन करने बाद समय–समय पर प्रशिक्षण दिया गया तथा एक्सपोजर विजिट करवाई गई।

प्रमुख जिम्मेदारीः–

- गॉव में बकरी का साधारण उपचार करना।
- बकरीपालकों को रोंगों से बचाव ,उपचार के संदर्भ में जनकारी देना।
- चारा, दाना, पानी एवं रखरखाव की जाकारी देना।
- स्वयंसहायता समूहों का गठन करना एवं मिटींग में मदद करना।
- नरेगा कि क्रियान्विति योजना में हस्तक्षेप करना।
- गॉव स्तर पर केम्पो का आयोजन करवाना।
- किसानों को पौधा रोपण के लिए प्रोत्साहित करना।
- महिलाओं को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण के लिए तैयार करना।
- गांव मे वेटेनरी केम्प लगवाने मे मदद करना
- जानवरो संम्बधित दवाईया / टीके उपलब्ध करवाना

अध्याय : 3 मुख्य गतिविधियॉ

परियोजना के इस पूरे तीन वर्षीय सफर में कार्यकर्ता , लक्षित समूह का क्षमतावर्द्धन प्रशिक्षण , एक्सपोजर विजिट, मासिक बैठक ,प्रशासन केसाथ मिटिग ,एस.एच. जी. ,पी. आर. आई. सदस्यों का प्रशिक्षण ,स्वास्थ्य केम्प ,कृषि प्रदर्शनी आदि गतिविधियों का आयोजन किया गया जों विस्तृत रूप से इस प्रकार है–

कार्यक्रम आमुखीकरण एवं पशुसखी प्रशिक्षण : कार्यक्रम बेहतर संचालित करने के लिए कार्यक्रम का ऑरियन्टेशन किया गया,जिसमें कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य , रणनीति आदि पर समझ बनाई गई।

आमुखीकरण का उद्देश्य :

- परियोजना का परिचय
- उद्देश्य स्पष्ट करना
- कार्यक्रम कि रणनीति से अवगत कराना
- मुख्य गतिविधियों से अवगत कराना
- पशुसखि कि भूमिका एव उतरदायित्व कि समझ
- विभिन्न स्टेकहोल्डर के साथ कार्य परिचय
- परियोजना से अपेक्षाऐं

प्रशिक्षण : परियोजना में बकरी पालन व्यवसाय में प्रबन्धन व स्वास्थ्य सुधार लाने हेतु प्रत्येक गॉव से चयनित प्शु सखी के बेहतर कार्य करने एवं अपेक्षित परिणाम लाने के लिए विभिन्न मुद्दों पर समय समय पर अलग –अलग सदर्भ व्यक्तिों से प्रशिक्षण दिलवाया गया । इन प्रशिक्षणों से कार्यकर्ताओं कि जिम्मेदारी एवं कार्य के प्रति बेहतर समझ बनी और इसी कारण लक्ष्य को प्राप्त करने में काफी हद तक सफलता मिली है।

कार्यकर्ता भ्रमण : परियोजना के अन्तर्गत कि जाने वाली गतिविधियॉ सुचारू रू‍प से संचालित करने ,बेहतर समझ बनाने एवं एक दूसरे से नया सीखने के उद्देश्य से समय समय पर विभिन्न संस्थाओं मे शैक्षणिक भ्रमण करवाया गया ।

प्रथम भ्रमण : सर सैयद ट्रस्ट तिजारा ,अलवर पशुसखियों का 2 दिवसीय भ्रमण कराया । यहॉ स्वयं सहायता समूह निर्माण ,स्थायित्व ,प्रबन्धन एवं पालबाडी कार्यक्रम के अनुभव से काफी समझा बनी तथा अपने क्षेत्र में लागू किया गया ।

द्वितीय भ्रमण : यह भ्रमण समर्थक संस्थान ,प्रतापगढ का किया गया , मुख्य रूप से यहॉ कृषि ,बागवानी ,नर्सरी का अवलोकन किया गया ।

तृतीय भ्रमण : सर सैयद ट्रस्ट तिजारा ,अलवर का किया गया इस बार यहॉ प्लान्टेशन प्रक्रिया , कृषि , फलदार पौधों , नर्सरी आदि का अवलोकन किया गया ।

चतुर्थ भ्रमण : यह भ्रमण जन कल्याण एवं ग्रामीण विकास संस्थान, लवां जैसलमेर किया गया।

समुदाय प्रशिक्षण :

बकरी विकास को ध्यान मे रखते हुए परियोजना क्षेत्र के महिला पशुपालको का विभिन्न मुद्दों पर प्रशिक्षण दिए गए , जिससे बकरी पालन व्यवसाय को एक दिशा मिली है और लोंगों कि आजिविका में इजाफा हुआ **है।**

- **मनरेगा** : परियोजना क्षेत्र के लोगों कि नरेगा पर बेहतर समझ बनाने के लिए समय समय पर प्रशिक्षण दिए गए जिससे अब लोग नरेगा कानून को समझ पाये है और काम कि मांग करने लगे है।
- **टीकाकरण :**(E.T. ,F.M.D.,P.P.R.)बकरियों में होने वाली बीमारियॉ तथा मृत्यु ,बकरी पालन व्यवसाय को सबसे ज्यादा प्रभावित करती है बीमारी से बचाने के लिए कुछ रक्षात्मक तरीक जैसे कि टीकाकरण समय पर किया जाने पर इस नुकसान से बचा जा सकता है इसीलिए लक्षित लोंगों को टीकाकरण प्रशिक्षण दिया गया । प्रशिक्षणों से पशुपालको कि

टीकाकरण को लेकर बहुत अच्छी समझ बनी है । अब लोग समय पर टीकाकरण करवाते हैं।

- **बकरी विकास** :बकरीपालन व्यवसाय को बढावा देने के लिए इस मुद्दे पर प्रशिक्षण दिए गए । पूर्व कि तुलना में बकरी पालन के प्रति लोगों में काफी समझ बनी है तथा स्वीकारने लगे है कि अगर उचित प्रबन्धन किया जाए तो अवश्य बकरी आजिविका का साधन बन सकती है
- **कृ"ि** ¼cht p;u ½ IykVs'ku] tyl alk/ku ¾ पौधारौपण ,कृ"ि एवं जल संसाधन पर प्रशिक्षण आयोजित किये । प्रशिक्षणों के बाद लोंगों कि बेहतर समझ बनी है । अब किसान बीज किसी पुर्ण जिम्मेदारी लेने वाले विश्वसनीय व्यक्ति से ही खरीदते है और समय समय पर ग्राम सेवक कि सलाह लेते है ।पोधारोपण के प्रति लोगो का उत्साह बढा है । संस्थान द्वारा कुल 23000 पौधे उपलब्ध करवाये गए है । कई किसानों ने स्वयं खरीद कर पौधे लगााए है जो बकरी पालन व्यवसाय के लिए अच्छे संकेत है।

समुदाय प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विवरण

प्रशिक्षण वि"ाय	स्थान	कुल सहभागी
• मनरेगा • टीकाकरण • बकरी विकास • कृषि (बीज चयन) • प्लांटेशन, • जलसंसाधन	सवेरा संस्थान/संकुल स्तर एवं ग्रम स्तर	481

<u>मनरेगा जागरूकता कार्यक्रम</u>

महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिए विभिन्न प्रशिक्षण आयोजित किए गए। नरेगा अधिकारियों को प्रशिक्षणों में शामिल किया गया और योजना कि सम्पूर्ण जानकारी दी गई । अब परियोजना क्षेत्र में नरेगा का बेहतर क्रियान्वयन हो रहा है।

- **महिला नेतृत्व क्षमता विकास प्रशिक्षण :** नेतृत्व क्षमता विकास के लिए महिलाओं का प्रशिक्षण करवाया गया इससे महिलाओं को काफी सम्बल मिला हे , अब वे स्वयं ग्राम पंचायत में जाकर समस्याओं पर बात करने लगी है।

- **निर्वाचित महिला प्रतिनिधि सूचना का अधिकार प्रशिक्षण :** सूचना के अधिकार पर प्रशिक्षित किया गया । इन प्रशिक्षणों से महिलाओं को इस कानून कि जानकारी मिली है जिससे अब वे किसी भी तरह कि जानकारी लेने के लिए किसी कि मदद से आवेदन करती है । जिससे सरकारी महकमा भी सचेत होने लगा है।

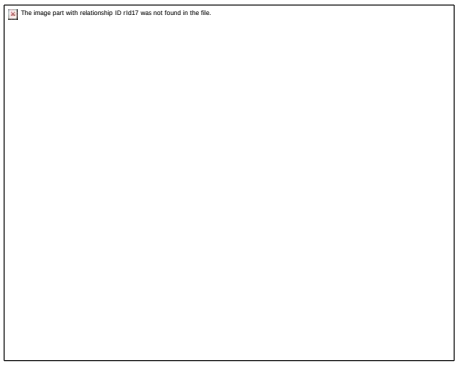

- **स्वयं सहायता समूह निर्माण एवं सशक्तिकरण प्रशिक्षण :**मनरेगा एव बकरी पालन से होने वाली आय कि बचत के लिए स्वयं सहायता समूह के गठन एवं सशक्त करने के लिए प्रशिक्षण आयोजित किये गए। वर्तमान में कुल 10 गॉवों 20 एस. एच. जी. है और उनमें कुल ..... सदस्य समूह में मिलकर कार्य कर रहे है।
- **महिला प्रतिनिधि सी. बी. ओ. प्रमोशन एवं प्रबन्धन प्रशिक्षण :**

मनरेगा जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विवरण

क. स.	प्रशिक्षण का वि"k;	कुल प्रशिक्षण	स्थान	कुल सहभागी
1	नेतृत्व क्षमता	2	सवेरा संस्थान	76
2	सूचना का अधिकार	2	सवेरा संस्थान	56
3	सी. बी. ओ. प्रमोशन एवं प्रबन्धन	3	सवेरा संस्थान	84

कृ"i सुधार

- **कृ"ि प्रदर्शन :**

परियोजना क्षेत्र में प्रति हैक्टेयर फसल पैदावार वृद्धि के लिए किसानो के साथ काम किया गया । इसका मुख्य उद्देश्य था कि कम भूमि में बेहतर तकनीक एवं बीज का सही चुनाव करके अधिक से अधिक फसल प्राप्त करना एवं किसान भाईयों को कृषि कि आधुनिक जानकारी उपलब्ध कराना। इसके अर्न्तगत कृषि केम्पों का आयोजन किया गया जिसमें कृषि विशे"ाज्ञों से जानकारी दिलाई गई । समय –समय पर खेतों कि मिट्टी का परीक्षण कराया गया ।इसके अन्तर्गत चुनिन्दा किसानों को रबी ,खरीब एवं जायद कि फसलों का अच्छा बीज निःशुल्क मुहैया कराया गया तथा कृषि र्प्यवेक्षक द्वारा अवलोकन किया गया ।साथ ही आवश्यक सलाह दी गई।इस प्रक्रिया से प्रति हैक्टेयर पैदावार में वृद्धि हुई है। अतः किसानों के आर्थिक लाभ में इजाफा हुआ है इससे कृषि कार्य मे लोगों की रूचि बढी है।

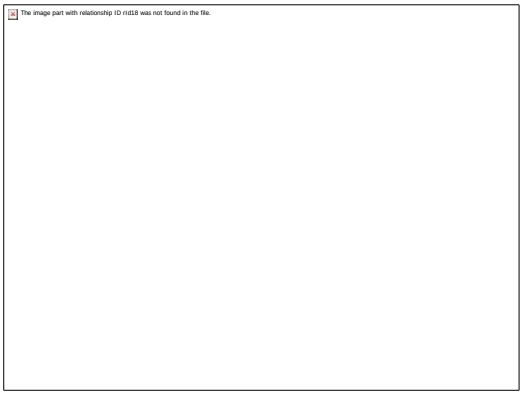

कृषि प्रदर्शन लाभान्वित किसानों का विवरण –

क्रं सं.	रबी की फसलें	क्षेत्रफल/बीघा	लाभान्वित किसानों की संख्या	उत्पादन/क्वि.
1	गेंहूँ	70	35	280
2	जौ	48	24	168
3	जीरा	16	8	15
4	गोभी	6	3	66
5	प्याज	7	3	78
6	चना	6	3	20
कुल योग		153	76	627

क्रं सं.	खरीफ एवं जायद फसलें	क्षेत्रफल / बीघा	लाभान्वित किसानों की संख्या	उत्पादन / क्वि.
1	ग्वार	105	52	320
2	प्याज	6	3	62
3	मूॅग	58	28	118
4	मक्का	52	26	142
5	बाजरा	12	6	39
6	भिण्डी	14	7	14
7	मिर्ची	14	7	32
8	टमाटर	6	3	32
9	बैंगन	16	8	42
कुल योग		283	140	801

- **जल संसाधन विकास ¼वेल रिचार्चिंग½ :**

परियोजना क्षेत्र कें गावों में जलकुपों का जल स्तर नीचें गिरता जा रहा हैं। जिससें गाव कें किसानों कें उत्पादन व आर्थिक स्थिती पर प्रभाव पडा है। जल स्तर की हानी से बचाव हैतु वेल रिचार्जिंग वॉटर रिसोंर्स बनाया गया है ताकि कुओं का जल स्तर Åपर आये जिससे फसलों की पैदावार कों बढाकर उनकी आर्थिक स्थिती में सुघार किया जा सके।

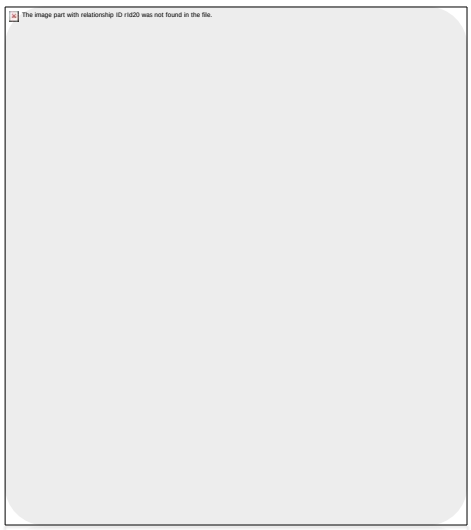

वेल रिचार्जिंग वॉटर रिर्सोस निर्माण सें कुए के जल स्तर में वृद्धि हुई मृदा संरक्षण व मिट्टी का कटाव होंनें सें बची है। फसल उत्पादन, बकरियों के लिए चारा, दाना–पानी उत्पादन कों बढावा मिला है।इससें बकरियों में दुग्ध मांस, बाल उत्पादन कों बढावा मिला है।

परियोजना अवधि के अन्तर्गत संस्था के सहयोग से बनाए वेल रिचार्जेज का विवरण –

वेल रिचार्जेज संख्या	लाभान्वित किसानों की संख्या	भूमि मात्रा	उत्पादन वृद्धि दर
10	10	25 हैक्टंयर्स क्षैत्र	25 प्रतिशत

बकरी पालक प्रतियोगिता : सिरोही नश्ल को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से प्रत्येक गॉव में बकरीपालक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।इन प्रतियोगिताओं में कुल 321बकरीपालकों ने भागीदारी की। गॉव के सभी बकरीपालकों कि बकरियों को इकठ्ठा करके बकरियों के वजन , बाल ,दूध उत्पादन एवं बच्चों के आधार पर निर्णय करके प्रथम ,द्वितीय,तृतीय पालको को पुरस्कृत किया गया ।इससें बकरी पालक बकरी के नश्ल ,चारा दाना पानी ,ट्रीटमेंट एवं साफ–सफाई के प्रति जागरूक हुए ।

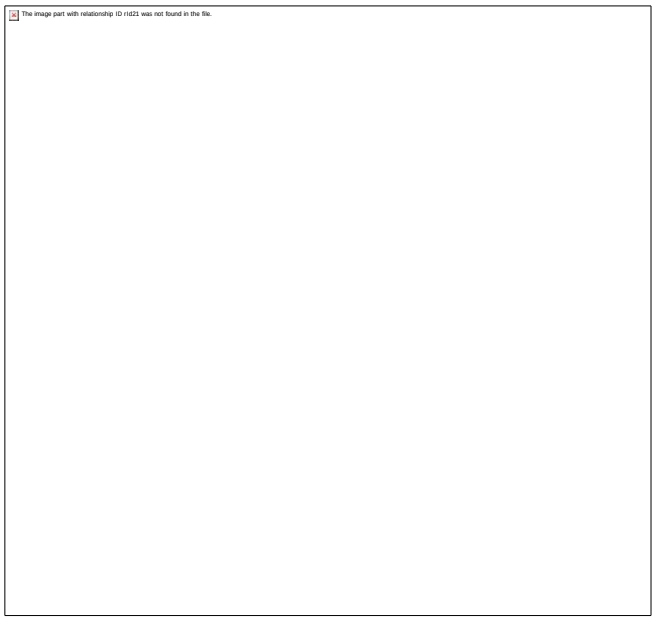

कृषि शिविर

परियोजना क्षेंत्र के गॉवों मे कृषि उत्पादन वृद्धि के लिए किसानों को कृषि की नई–2 जानकारी देनें के लिए कृषि शिविरों का आयोजन किया। इन शिविरों में चिन्हित गरीब किसानों के अलावा अन्य किसानों को भी शामिल किया गया। इनमें कृषि विशेषज्ञों,कृषि पर्यवेक्षक के द्वारा मिट्टी परीक्षण, उन्नत खाद बीज, जैविक खाद, गोबर खाद, मिंगनी खाद, रासायनिक उर्वरक, कीट व्याधियां व जैविक प्रबन्धन की जानकारी दी गई। इन शिविरों में मुख्य रूप से बीज चुनाव को फोक्स किया गया। जिसके तहत चिन्हित गरीब किसानों को खरीफ, रबी एवं जायद फसलों के बीज निःशुल्क उपलब्ध करवाया गया।

कृषि कार्यो के प्रति जागरूक हुए है अब खाद व बीज की खरीद प्रमाणित संस्था/दुकान से करते तथा उसका पक्का बिल लेने लगे। फसली बीमा करवाने लगे है। अब प्रति हैक्टेयर उत्पादन में वृद्धि हुई । संस्था द्वारा सबसे अधिक बीज ग्वार का वितरित किया गया है। जिससे किसानों को अच्छा भाव होने के कारण लाखों रूपयों का फायदा हुआ है और इस फसल से बकरी के लिए चारा उपलब्ध हुआ हैं।

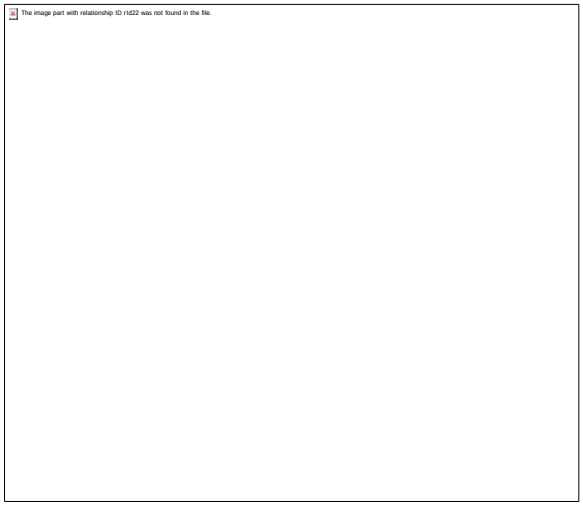

स्वास्थ्य शिविर :

बकरी व्यवसाय को सफल बनाने के उद्उेश्य से गॉव स्तर और संकुलस्तर पर परियोजना अवधि के दौरान कुल 28 स्वास्थ शिविरों का आयोजन किया गया।जिसमें ब्लॉक पशुचिकित्सा अधिकारी डा0 महेश पाण्डला एवं अन्य पशुचिकित्सा विशेषज्ञों से बकरी के रोगों ,

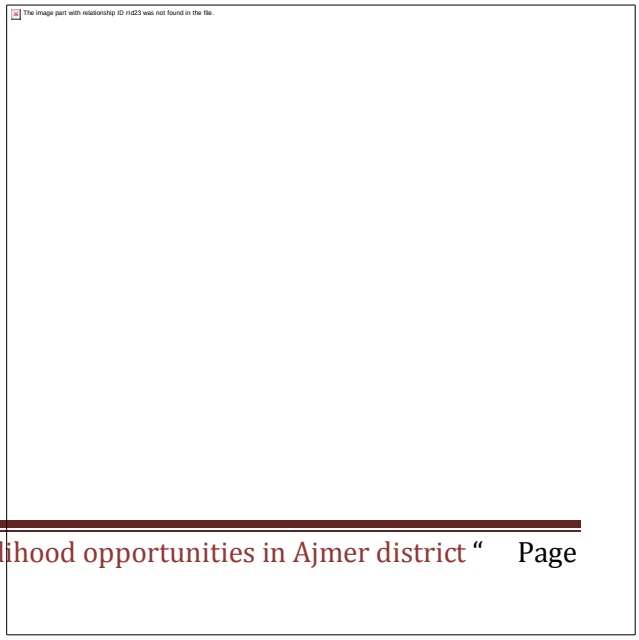

बचाव, उपचार की जानकारी दी गई। इससे काफी बदलाव हुआ है

- पशुसखियों एवं बकरी पालकों को बकरी के स्वास्थ्य की जानकारी हुई।
- रोंगों के कारण उनके देसी उपचार की समझ।
- डाक्टर की सलाह लेना।
- चरा ,दाना ,पानी की समझ।

व"र्ा	कुल स्वास्थ्य शिविर	कुल सहभागी पशुपालक
2011–2012	4	240
2012–2013	12	596
2013–2014	12	610
कुल योग	28	1446

सकुल स्तरीय कार्यशाला :

स्थान– सवेरा केम्पस **दिनांक–20 सितम्बर, 2014**

सहभागी संख्या– 236

सतत बकरी पालन से आजिविका विकास परियोजना तहत क्लस्टर लेवल कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में परियोजना क्षेत्र कि स्वयं सहायता समूह की सदस्य, पशुसखि, समुदाय सदस्य एवं परियोजना कार्यकर्ताओं ने भागिदारी निभाई। इसमें ब्लॉक पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. महेश पाण्डला, सामाजिक कार्यकर्ता बिमला नागरानी, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण से मुन्नी देवी व संस्थान अध्यक्ष के. दूधा कार्यशाला में शरिक हुए। संस्थान सचिव बी.एल. वैष्णव परियोजना कि उपलब्धियों को शेयर किया तथा कार्यशाला का उद्देश्य बताया जो इस प्रकार है–

- परियोजना कि उपलब्धियों एवं चुनौतियों पर आपसी शेयरिंग करना।
- परियोजना के कार्यो को संचालित रखने के लिए विचार विमर्श करना।
- समूहों का संकुल निर्माण।

- कार्य कि नियमितता के लिए आगामी रणनिति तय करना।
- समूह मजबूतिकरण।

कार्यशाला कि अध्यक्षता बिमला नागरानी ने की। संकुल निर्माण करने का कार्य और समूह के मजबूतिकरण को लेकर संदर्भ व्यक्ति मंजू चौहान ने कार्य किया। इसके अलावा अन्य मुद्दों पर राजकुमार यादव, जयपुर से एम.एल. प्रजापत आदि ने कार्य करवाया। इसके साथ–साथ पशुसखियों एवं समूह की महिलाओं ने अपने विचार एवं अनुभव शेयर किये। और महिलाओं ने तय किया कि संस्थान द्वारा किये गए कार्य को ओर गति के साथ आगे तक ले जायेंगे। इसके लिए हम सब महिलाए मिलकर काम करेंगी। वैसे भी ये कार्य हमारी आजिविका से जुड़ा हुआ है। लेकिन महिलाओं ने कहा कि हमें कभी–कभी आप जैसे लोगो कि जरूरत होंगी। अतः हमारी मदद अवश्य करते रहे। संस्थान सचिव बी.एल. वैष्णव ने विश्वास दिलाया कि हम चाहे कोई एजेंसी हमें आर्थिक सहयोग नही दे फिर भी हम आपके साथ जुड़े रहेंगे।

निष्कर्ष :–

- सम्भागियों को परियोजना की उपलब्धियों को जानने, सोचने और समझने का मौका मिला।
- बकरियों में होने वाली बिमारियों, उपचार, एवं बीमा योजना के बारे मे जानकारी बढी।
- संकुल निर्माण पर सहमति बनी।
- सरकार द्वारा संचालित नई–नई योजना की जानकारी मिली।
- एस.एच.जी. समूह एवं पशुसखियों को आत्मनिर्भरता हेतु बल मिला।

अध्याय : 5 प्रभाव / परिणाम

संस्थान द्वारा सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट के सहयोग से सतत बकरी पालन से आजिविका विकास परियोजना का 3 वर्ष सफल संचालन किया गया । इस तीन व"ीय अवधि मे लोगों के साथ काफी गतिविधियॉ की गई । परियोजना अवधि पूर्ण होने पर किए गए कार्यों का मुल्यांकन किया गया अतः जो परिणाम निकलकर आये है वे इस प्रकार है–

1. बकरी विकास

बकरियों कि 12.4 करोड जनसंख्या के साथ भारत दूसरे स्थान पर हैं। बकरी पालन विशे"ा रू" से विकासशील देशों के सुखे और पर्वतीय प्रदेशों में फलने फूलने वाला मुख्य व्यवसाय है। भारत में बकरियों कि स्थिति दयनीय है क्योंकि सरकार द्वारा बकरी पालन को प्रोत्साहन प्रदान करने व आनुवांशिक सुधार हेतु कोई खास निवेश नहीं किया जा रहा हैं।

राजस्थान भारत का सबसे बडा राज्य है और यहॉ तरह तरह कि बकरी की नश्ल पायी जाती है । लेकिन राज्य में बकरी पालन लगातार पुरानी ,साधारण ,अविकसित तथा कमजोर तकनीकी से किया जा रहा है । इस कारण पालको को इस व्यवसाय मे आर्थिक हानि का सामना करना पडता है। जिससे इस व्यवसाय के प्रति लागों का रूझान कम हेता जा रहा

बकरी पालन के प्रति सोच बदलाव

संस्थान ने बकरी पालन को लेकर 10 गॉवों में काम शुरू किया उस समय लोगों के विचार इस व्यवसाय को लेकर काफी नकारात्मक थे। उस समय बेसलाइन सर्वे किया गया जिसमें निकलकर आया कि कुल 10 गॉवों में 2590 परिवारों में 1363 बकरीपालक परिवार थे और मात्र कुल 8336 बकरियॉ पाली जा रहीं थी। लेकिन लगातार बकरी से जुडे हुए विभिन्न मुद्दे जैसे नश्ल, चारा, दाना, पानी, प्रबन्धन टीटमेंट ,चारागाह आदि पर प्रशिक्षण दिए गए साथ ही स्वास्थ्य केम्प ,बकरीपालक प्रतियोगिता का आयोजन किया एवं एक्सपोजर आदि से नए तरीके एवं तकनिकी से अवगत करवाया गया । अब लोगों कि बकरी पालन को लेकर सकारात्मक सोच बनी है। अभी वर्तमान में कुल बकरियॉ .....पालको ,द्वारा पाली जा रही है जो अपने आप में वृद्धि का संकेत है। सतत बकरी पालन से आजिविका विकास परियोजना कें अन्तर्गत एस.एच.जी महिलाओं को दी गई अंशदान राशी से बकरिया खरीद कर दुग्ध उत्पादन कों बढावा मिला है।इससे गरीब परिवार के बच्चें– बच्चियों कें खानें–पीनें के लिए दुग्ध घी मक्खन आसानी से मिलने लगा है। परिवार की आय में बढोतरी हुई है।

स्थिति	कुल परिवार	कुल बकरी पालक	कुल बकरियां
पूर्व स्थिति	2590	1363	8336
वर्तमान स्थिति	2684	1635	17534

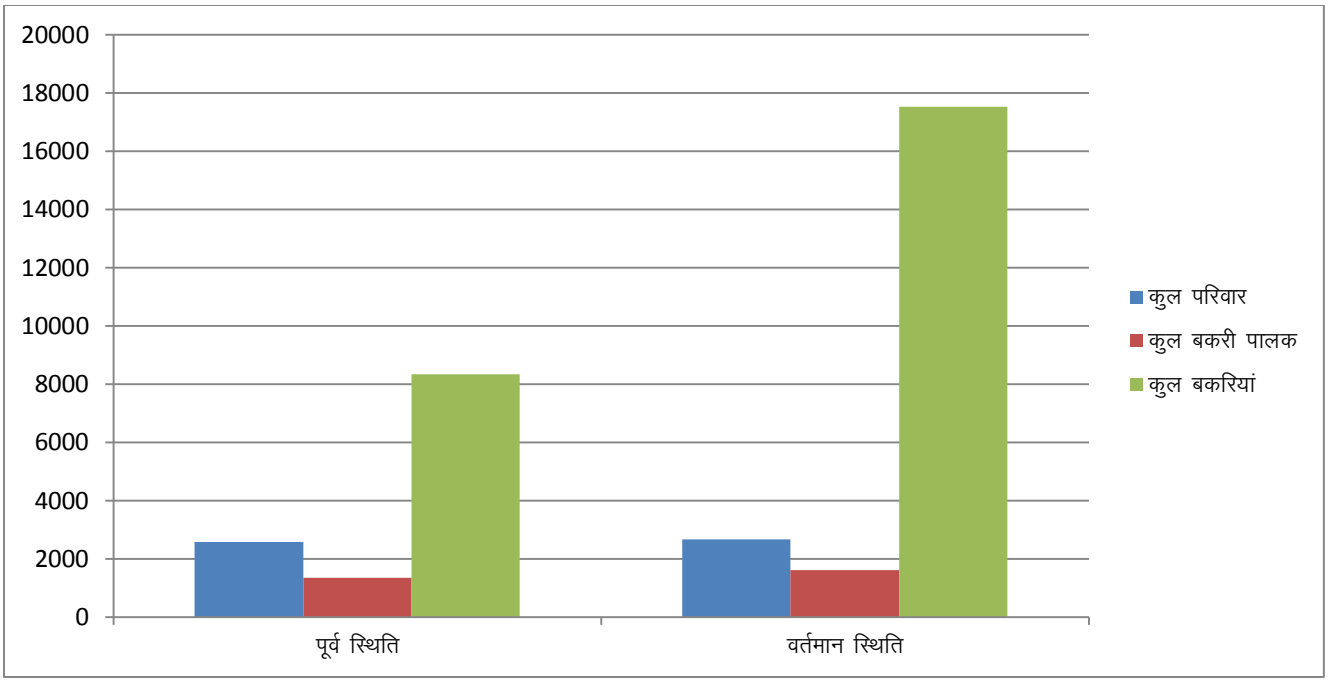

बकरी की नस्ल व उपयुक्त पशु का चुनाव :

वैसे तो हमारे यहॉ कई प्रकार कि नस्ले पायी जाती है, लगभग 80 प्रतिशत ऐसी नस्लें है जो निम्न उत्पादन क्षमता वाली है। हॉलाकि स्थानीय परिवेश में ये बकरियॉ पूर्णतः सामजस्य बना चुकी है लेकिन उत्पादन क्षमता कम होने के कारण कम मुनाफे का व्यवसाय कि सोच स्वत बन गयी है । हमने इस परियोजना के अर्न्तगत सिरोही नस्ल कि पेरवी कि है क्योंकि यह दोहरा लाभ देती है । यह नस्ल अपने औसतन 200 दिनों के दुग्धकाल में 125 ली. तक दूध देती है तथा शारीरिक वनज 25–30 कि.ग्रा. तक पहुॅच जाता है।

संस्था के आर्थिक सहयोग से परियोजना क्षेत्र के गॉवों में .....सिरोही नस्ल के बकरे दिए गए , जिससे बेहतर नस्ल का उत्पादन हुआ है । सिरोही बकरें से प्रजनन करवानें से अच्छी नस्ल कें बच्चे पैदा हुए है।बच्चों का पैदा होनें पर वजन तौलनें पर वजन **1.6किलों** ग्रांम पाया गया।पूर्व के वजन एव वर्तमान के वजन का तुलनात्मक अध्ययन करनें से पता चला है कि वर्तमान समय में उत्पन्न बच्चों का औसत वजन बढा है।इन सभी बातों कों ध्यान में रखतें हुए लोग बकरी पालन को एक व्यवसाय कें रूप में अपनानें लगे है, जिससे परिवार की आजिविका विकास कों बढावा मिला है। अब लोगों कि आमदनी में लगातार वृद्धि हो रही है। कई बकरीपालक स्वयं बकरे खरीद कर इस नस्ल को बढावा दे रहे है और उपयुक्त पशु का चयन करने में सक्षम हुए है। अब इस नस्ल को मन से स्वीकार करने लगे है।

- अच्छी नस्ल की बकरियां एव सिरोही नस्ल के बच्चें उत्पन्न, वजन में औसतन वृद्धि।
- गॉव में प्रजनन कें लिए एक निश्चित सिरोही नस्ल कें बकरें का पालन–पोषण।
- सिरोही नस्ल कें प्रति लोंगों में सकारात्मक सोंच का विकास ।
- दुग्ध उत्पादन में वृद्धि।
- गरीब परिवारों के बच्चों के लिए घी ,दुग्ध की उपल्बधता।
- अपेक्षाकृत प्रजनन दर में बढी हुई, जिससे आर्थिक लाभ में वृद्धि ।

समूहो को दिए गए सिरोही बकरों का विवरण

क्र. स.	गॉव का नाम	बकरा संरक्षण कर्ता का नाम
1	जिलावडा	जैतून
2	हाथीपट्टा	सेठा रावत
3	बाडा	सजनी समूह
4	टण्टिया	गुलाबी देवी
5	बालद दडा	मनफूल
		धन कंवर
6	मोहनपुरा	प्रेम देवी
7	बनेवडी	हगामी देवी
8	नौलखा	मीरां देवी
9	कानपुरा	चौथी देवी
		जेबुना
10	हरडी	रामपाली

.

बकरी का स्वास्थ्य एवं प्रबन्धन

बकरी बहुत ही स्वस्थ तथा चुस्त जानवर है। आमतौर पर बकरियों मे कम से कम बीमारियॉ होती है परन्तु बीमार होने पर बकरी बहुत असहयोगी हो जाती है। लेकिन यह महत्वपूर्ण बात है की किसी बीमारी इलाज करने से रोकथाम करना अधिक लाभदायक एवं आसान होता है।इस कार्यक्रम में बकरी के स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देने का प्रयास किया गया है।

पशुसखी : फिल्ड सतर पर पशुसखियों को प्राथमिक उपचार करने के लिए प्रशिक्षित किया गया और मेडीसन किट दिया गया।वर्तमान में 10 गॉवों में ऐसी लगभग 18–20 महिलाऐं है जो बकरियों में होने वाले आम रोगों का इलाज कर लेती है। पशुसखियों कि बकरी के स्वास्थ्य , प्रबन्धन टीकों जैसे –F. M. D. ,H. S. ,E.T.V.आदि पर को लेकर काफी अच्छी समझ बनी है।

बकरी पालक : प्रारम्भ में देखा गया कि बकरी पालको को रोगों एवं प्रबन्धन के बारे में न के बराबर जानकारी थी।लेकिन प्शुसखी के साथ लगातार सम्पर्क में रहने एवं प्रशिक्षणेां में भागीदारी लेने,एक्सपोजर करने एवं डा0 कि सलाह लेने से इस व्यवसाय के प्रति समझ बनी है।अब इन्हें देशी दवाइयों की भी काफी जानकारी है । पशुसखियों के अलावा समूह की कईं महिलाऐं है ,जिनको बकरी से सम्बन्धित रोगो के बारे में ठीक से जानकारी है। अब वे रोगों से बचाव के लिए बकरियों के चारा ,दाना , पानी रखरखाव एवं समय पर टीकाकरण पर पुर्ण ध्यान देने लगे है। स्वयं बकरी पालक भी कई बिमारियों का इलाज करने लगें है तथा अब नजदीकी वेटेनरी डॉक्टर कि सलाह लेने लगे है । इस तरह कि व्यवस्था प्रबन्धन से बकरीपालक बकरियों को जानलेवा बीमारियों से बचाने में सफल हो रहें हैं।अतः आर्थिक लाभ में लगातार वृद्धि हो रही ,जिससे व्यवसाय के प्रति रूचि बढी है।

- बकरी पालन व्यवसाय के प्रति समझ बनी है।
- बाडे कि नियमित सफाई की जाने लगी है।
- बकरियों को पानी पिलानें की खेली की सफाई का ध्यान रखा जाने लगा है।
- गावों में महिलाऐं बकरियों के स्वास्थ्य कें प्रति जागरूक हुई
- बकरियों के रहनें के स्थान कों स्वच्छ रखने की समझ बनी है।
- टीकाकरण की समझ व समय पर टीकाकरण किया जाने लगा है
- डिवर्मिंग एव दवाईयों की जानकारी हुई है।
- बकरियों कि मृत्युदर .....प्रतिशत एवं बच्चों की ..... प्रतिशत घटी है।
- अब इन्हें देशी दवाइयों की भी काफी जानकारी हुई है।
- चारा ,दाना , पानी रखरखाव एवं समय पर टीकाकरण पर पुर्ण ध्यान देने लगे है।
- स्वयं बकरी पालक भी कई बिमारियों का इलाज करने लगें है।

- बकरियों को जानलेवा बीमारियों से बचाने में सफल हो रहें हैं।
- व्यवसाय के प्रति रूचि बढी है।

बकरी की बाजार व्यवस्था :

किसी भी व्यवसाय की तरह बकरी पालन व्यवसाय की मुख्य सफलता उत्पाद के सही समय व उचित दर पर बाजार करने पर निर्भर करती हैं । पूर्व में बकरी पालक इस मुद्दे पर ज्यादा ध्यान नहीं देते थे। उदाहरण के लिए बकरे की कीमत का निर्धारण अंदाज पर तय होता था। अब इस प्रक्रिया में बदलाव आया है। बकरी पालको के साथ लगातार मार्केटिंग को लेकर बातचीत किए जाने स`अब काफी सोच समझकर निर्णय लेते है ,अर्थात् इस प्रकार निम्न बदलाव देखे जा सकतें है –

- सही समय बेचना
- बकरे ईद ,होली, के लिए बकरे तैयार करना।
- सही उम्र में बकरे को बेचना ।
- बकरों को लगभग 10–12 माह का होने पर बेचना।
- लोग बकरी के दूध कि उपयोगिता को समझने लगे है।
- छोटे बच्चों को बकरी का ही दूध पिलाते है।
- ब्करी को खली एवं बांट देने से दूध में वसा कि मात्रा अच्छी होने लगी है जिससें कि प्रति ली.भाव 24–30 रूप्ये होता है अतः दूग्ध विक्रय में भी बकरी पालकों कि रूचि बढी है।
- ब्करी का एक उत्पाद मिगनी है जो नाइटौजन तथा फास्फोरस का अच्छा स्त्रोत ह`अब बकरी पालक इस खाद को अच्छी फसल तैयार करने लिए सुरक्षित रखते है और समय पर खेत में डालते है ,जिससे अच्छी पैदावार हो रही है। पेड –पौधों में डालनें से तेजी से वृद्धि कर रहे है।
- कई पालक खाद को अच्छे भावों बेचते है जिससे आर्थिक लाभ हो रहा है।

2. चारा विकास

राजस्थान प्रान्त कि बात कि जाए तो यहॉ प्शुओं के लिए सबसे विकट समस्या चारे कि है क्योंकि राज्य मे व"ाा अनियमित ,अनिश्चित ,अपर्याप्त होती है ,और प्रत्येक पॉच ब"ार्ा में अवश्य एक बार भयकंर अकाल पडता है। इस कारण राज्य सुखा का पर्याय बन चुका है।ऐसे हालात में चारा अनाज कि बहुत समस्या होती है।चारा नहीं मिलने के

कारण प्शुओं को कम दामों में बेचना पडता है।इन स्थितियों के कारण लोगों को प्शुधन सम्पदा में बहुत हानि होती है।लेकिन किसानों के पास और कोई उपाय नहीं होने के कारण कृ"ि एवं प्शुपालन को मुख्य व्यवसाय के रूप मे अपनाये हुए है। हमने इस परियोजना के अन्तर्गत बकरी पालन के साथ चारा प्रबन्धन को महत्वपूर्ण समझाते हुए इस भंयकर समस्या से निपटने के लिए कार्य किया

चारागाह विकास

चारागाह विकास के लिए पंचायती राज जन प्रतिनिधियों के साथ बातचीत की गई तथा आगामी दुरगामी परिणामों से अवगत कराया गया। चारागाह विकास के लिए नरेगा की योजना में हस्तक्षेप किया गया तथा चारागाह मेडबंदी जैसे कार्य करवाये गए ताकि प्रभावशील व्यक्ति कब्जा नहीं कर सके ।नरेगा के अन्तर्गत पेड–पौधे लगाानें को बढावा देने के लिए नर्सरियॉ लगाई गई है।फाउन्डेशन फॉर ईकॉलाजीकल सेक्युरिटी ; थ्ै द्ध ं के साथ मिलकर मनरेगा द्वारा चारागाह विकास के लिए सामलात अभ्यिान के तहत फील्ड स्तर पर प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया । चारागाह के प्रति लोगों को सवेंदनशील बनाने के लिए उनकी जिम्मेदारी ,कानून प्रावधानों ,आगामी सम्भावित परिणामों से अवगत कराया गया । अब लोग चारागाह के प्रति काफी जागरूक हुए है जैसे–

- चरागाह के प्रति समझ बनी है।
- चरागाह को अपनी सम्पति की तरह समझ कर ध्यान रखना।
- नर्सरी का ध्यान रखना ।
- नरेगा से चारगाह के लिए काम कि मांग करना।
- चारागाह भूमि के संरक्षण को बढावा देना ।
- जलाशयों ं की खुदाई कराना।
- नर्सरी में चारों तरफ पशुरोधक खाई का निर्माण कराना।
- पेडों कि कटाई पर विरोध करना।

पौधा–रोपण

परियोजना के अन्तर्गत बकरी पालन के लिए चारे कि आगामी संम्भावना को ध्यान में रखते हुए परियोजना क्षेत्र गॉवों में बकरी के चारे वाले एवं फलदार पेड–पौधे लगाानें के लिए प्रोत्साहित किया गया ।संस्था द्वारा नर्सरी विकसित की गई और समूहों को इसके तरीके

बताए । संस्थान ने स्वयं द्वारा विकसित किए पौधों एवं अन्य निजी नर्सरियो से पौधे क्रय किया और गरीब परिवारों का चयन करके निःशुल्क पेड–पौधे उपलब्ध करवाये गए । पेड–पौधों के रखरखाव एवं लगाानें पर प्रशिक्षण आयोजित किये गए। बकरीपालक समूहों एव प्शुसखियों का नर्सरी ,बागानी एवं प्रबन्धन का अन्य जिलों कि संस्थाओं एवं नर्सरियों का एक्सपोजर करवाया ,जिससे प्लांटेशन कि प्रक्रिया समझनें में मदद मिली ।लोगों ने अपने घर व खेतों पर चारे एवं फलदार पेड लगााए है।हमने अरडू , नीम ,बैर पर अधिक ध्यान दिया क्योंकि यह ऐसे पेड है जिनको पानी कि कम आवश्यकता होती है और चारा अधिक मिलता है। परियोजना के अन्तर्गत कुल.....पेड लगाने का लक्ष्य रखा गया था ,अब तकह हम संस्थागत मदद से.....पेड–पौधे गॉवों लगा चुके है। अब लोगों में पर्यावरण एवं पेडों के सोच में बदलाव आया है जो इस प्रकार दृ"टिगोचर होते है–

- पेडों के प्रति समझ का विकास हुआ है।
- लोगों में पेड–पौधे लगानें के प्रति रूचि बढी है।
- अब स्वयं के पैसों से पेड–पौधे लगाने लगे है।
- गड्डे खोदने एवं रखरखाव की समझ विकसित हुई है।
- अब अपने स्तर पर भी नर्सरी विकसित करने लगे है।
- पेडों कि बीमारियों के प्रति समझ बनी है ।
- पेडों में बकरी के मींगनी का खाद देने लगे है।

परियोजना अवधि के दौरान किए गए वृक्षारोपण का विवरण इस प्रकार है–

गॉव की संख्या	परिवारों की संख्या	नीम	अरडू	बैर	ऑवला	शीशम	नीम्बू	अन्य	कुल
10	2200	8145	7589	5214	2000	2000	2000	5645	32593

पेड–पौधा प्रबन्धन

संस्थान द्वारा पेडों की देखरेख ,रखरखाव पर बकरी पालक समूहो को प्रशिक्षण दिया गया।इसके लिए विभिन्न स्थानों पर शैक्षणिक भ्रमण कराया गया।पौधे मर जाने के कारणों पर विस्तृत जानकारी दी गई।आमतौर पर बकरी पालक बकरियों को नीम ,खेजडी ,बैर ,बबूल आदि की पत्तियों को काटकर नीचे जमीन पर ही खिलातें थे।जिससे कई प्रकार के संक्रमण होने का खतरा होता था तथा सडी–बासी लुम व

पापडी कों दुसरें दिन बकरियों के खानें सें उनकी मृत्यु तक हों जाती थी।अब चारा प्रबन्धन एवं पौधों के रखरखाव में बहुत बदलाव में बहुत बदलाव आए है जो इस प्रकार है–

- अब महिलाऐं टहनियों कों बाडें की बाड पर डालकर खिलाने लगी है जिससें बकरियॉ बडें चाव सें खाती है एवं झूठी भी नही छोडती है, जिससे बकरियों की मृत्युदार में कमी आई है।
- महिलाओं की अर्थिक आय में वृद्धि हुई है।
- बकरियों कों पहलें जौ, ज्वार, बाजरा आदि दाना खिलाया जाता ,लेकिन अब महिलाओं में इन धानों का दलकर खिलानें की समझ बनी है।
- अब सर्दी, गर्मी,व बरसात मौसम कें अनुसार बकरियों कों भौजन दाना–पानी देते है।
- बकरियों के पानी पीनें के लिए खेलीयॉ बनाई गई है।
- खेलियों को समय –समय पर साफ करते है।
- ब्करियों के लिए पेड–पौधें कि पत्तियॉ व फलियॉ ,ताजे हरे चारे एक उतम साधन है। इनको सुखाकर बकरियों को खिलाने लगें है।
- टब इन्हें चारा संरक्षण की विधियों की जानकारी हुई है जैसे–हे साइलेज,
- बकरियों के दाना मिश्रण एक आदर्श तरीके से करने लगे है जैसे–

दाना मिश्रण की सेरचना

सामग्री	प्रतिशत बच्चों के लिए	वयस्क बकरी/बकरा के लिए
जौ/मक्का/बाजरा	52	57
मूंगफली की खली	30	15
गेहूँ /धान/चने की भूसी	15	25
सधारण नमक	1	1
खनिज लवण	2	2

वर्तमान में सफल पौधों का विवरण इस प्रकार है–

कुल लगाए गए पौधो की स.	असफल/मर जाने वाले पौधो कि संख्या	सफल पौधों की संख्या
32593	1500	31093

3. मनरेगा जागरूकता

वर्तमान में मनरेगा देश की सबसे बडी रोजगार योजना है जो प्रत्येक नामांकित परिवार को काम की गारटी देती है। यह योजना भारतीय नागरीकों को काम का वैधानिक अधिकार प्रदान करती है। लेकिन योजना का ठीक से प्रचार प्रसार के अभाव में लोगों को इस कि सम्पूर्ण जानकारी नहीं है।सरकार इस योजना को बेहतर क्रियान्वयन नहीं कर पा रही हैं।

संस्थान द्वारा मनरेगा क्रियान्वयन के लिए स्वयं सहायता समूहों के कईं प्रशिक्षण एवं गतिविधियॉ आयोजित की गई ।इनसे समुदाय नरेगा के प्रति समझ बनी है। अब वर्तमान में यह निम्न बदलाव देखे जा सकते है–

- नरेगा कानून की समझ बनी है।
- नरेगा क्रियान्वयन योजना में भाग लेने लगे है जैसे सडक ,मेडबंदी ,चारागाह विकास के लिए नर्सरी लगाना, पशु रोकथाम खाई आदि।
- महिलायें काम की मांग करने लगी है और 6 नं. फार्म से आवेदन करने लगी है जिससे रोजगार भत्ता मिलता है।
- अब नरेगा अधिकारियों से किसी समस्या पर बातचीत करती है।
- सरकारी योजनाओं जैसे विधवा पेंशन,बी.पी. एल. ,ए. पी. एल. आवासीय योजना ,निशुल्क दवाई योजना ,108 ,104 एम्बुंलेन्श आदि पर समझ बनी है तथा इनका फायदा लेने लगे है।
- अब वे स्वयं ग्राम पंचायत में जाकर समस्याओं पर बात करने लगी है।
- किसी कार्य के लिए महिलाऐं मिलकर काम करने लगी है जैसे– किसी अधिकारी से मिलना ,मेट को हटाना –लगाना,स्कूल में जाना ,योजना का लाभ लेना आदि।
- वे अब काम के बदले मिलने वाले पैसों प्रति सजग हुई है किसी तरह की हेराफेरी होने पर तुरन्त सम्बन्धित व्यक्ति से बात करती है।
- सूचना के अधिकार की समझ बनी हैं।

- कईं महिलाओं ने किसी की मदद से सूचना के अधिकार के तहत जानकारी ली है।
- अब सरकारी कर्मचारी सचेत रहने लगे है।
- अभी कुल 36.स्वयं सहायता समूह बनें हुए है और कुल 576 महिलाऐं मिलकर कार्य कर रही है।
- वर्तमान में इन समूहों के द्वार आपस में एवं बैंक के साथ का लेनदेन किया जा रहा है।
- स्वयं सहायता समूहो ने बैक ऋण लेकर आवश्यकतानुसार पूॅजी अपने काम में ले रही है जिससे काफी बचत हो रही है,जिससे महिलाओं की आय में वृद्धि हुई है।
-

4 कृ"ि कार्य में वृद्धि

कृ"ि प्रदर्शन– राजस्थान में व"kZ कम होने एवं लगातार अकाल की चपेट में आने कारण कुओं का जल स्तर भी गिरता जा रहा है ऐसे में रबी एवं जायद की फसल नहीं हो पाती। व"kZकाल में मानसून पर निर्भर खरीब की फसल होती है ।अतः इस प्रकार स्थितियों के कारण कृ"ि केम्पों का आयोजन करके कृ"ि विशे"ाज्ञों से चिन्हित किसानों को कृ"ि के आधुनिक तरीको से अवगत कराया गया।इस प्रकार इन तमाम गतिविधियों से कृ"ि कार्य में निम्न बदलाव स्प"ट देखे जा सकते है–

- किसानों की इस पेशे के प्रति रूचि बढना।
- कृ"ि कार्यों कि समझ।
- बीज का सही चुनाव।
- परम्परागत संसाधनों का उपयोग।
- गोबर एवं मींगनी के खाद का उपयोग स्वयं करने लगे है, पूर्व में बेच देते थे।
- प्रति हेक्टेयर पैदावार में वृद्धि।
- कम लागत में अधिक मुंनाफा।
- फसल चक्र को अपनाना

जल संसाधन

यहॉ वर्षा कम होने के कारण जल स्तर लगातार गिरता जा रहा जिससे कुओं में पानी सुखने के कगार पर है इसलिए वर्षा केदिनों खेत में बहने वाले पानी को सीधा कुए में डालने के लिए प्रत्येक गॉव में एक वैल रिचार्ज बनाया गया। अब इन वैल रिचार्जो की देखभाल स्वयं किसान करते है। पूर्व कि अपेक्षा कुओं के पानी में बढ़ोतरी हुई है। जिससे सिंचित भूमि कि मात्रा बढी है। मृदा संरक्षण व मिट्टी का कटाव होंनें सें बची है। और किसानों कि आय में इजाफा हुआ है।

परियोजना से सीख एवं अनुभव

इस कार्यक्रम से काफी लोगो के बकरी पालन से के प्रति समझ बनी है। पूर्व में बकरी पालन को हल्का ऑकते थे कि इस पर क्या काम होगा, कैसे होगा तथा हम पशुपालको अर्थात् ग्वालों के साथ काम कैसे कर पायेंगे। इस प्रकार कई बाते मन में चलती थी । परन्तु जब कार्यक्रम की शरूआत की गई। और प्रारम्भिक प्रशिक्षण आयोजित करके फिल्ड स्तर पर कार्य शुरू किया गया। अब नये–2 अनुभव निकल कर आने लगे। अनुभव काफी रूचिपूर्ण भी थे तो परेशान करने वाले भी। प्रथम वर्ष के बाद लगने लगा कि इस कार्यक्रम को बेहतर बनाया जा सकता हैं । क्योंकि तब तक पशुसखियों एवं अन्य स्टाफ कि समझ बन चुकी थी। प्रत्येक इश्यू पर संवाद कर पाने में सक्षम हो चुके थे । इस कार्यक्रम से हमें काफी नई–2 चीजें सीखने को मिली जो इस प्रकार है–

- बकरी पालन के प्रति ठोस समझ।
- बकरी के विभिन्न रोगो एवं उपचार की जानकारी।
- नस्ल सुधार के तरीके एवं बेहतर नस्ल के प्रति समझ।
- बकरी के प्रबन्ध एवं रख–रखाव, बाड़ा, चारा, दाना, पानी, टीकाकरण, मार्केटिंग व्यवस्था।
- चारा बनाने कि बनाने कि विधियां।
- चारागाह विकास कि योजनाऍ।
- मनरेगा का कियान्वयन कैसे हो इसके प्रति समझ।
- सूचना का अधिकार की समझ।
- नर्सरी विकसित करने का कौशल।
- पौधों की विभिन्न जातियों एवं प्रबन्ध की समझ।
- कृषि के आधुनिक तकनिकी की जानकारी।

- जल संसाधन प्रबन्धन की समझ।

मुख्य चुनौतियॉ :

परियोजना के अन्तर्गत काम करते हुए इन सफलताओं के लिए तरह–तरह कि चुनौतियों का सामना करना पडा । क्योंकि काम कि प्रकृति भी ऐसी ही थी।मुख्य चुनौतियॉ इस प्रकार है–

- पशुसखी का चयन।
- अनुभवी लोगों का न मिलना
- स्टाफ का लम्बे समय न रूकना।
- स्वयं सहायता समूह का गठन।
- बकरी पालकों को सिरोही नस्ल पर विश्वास कम होना।
- लोगों का विश्वास जीतना
- विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षणों ¼आवासीय½ के लिए महिलाओं को तैयार करना।
- सरकारी तंत्र के लोगों को परियोजना से जोडना।
- किसानों को पौधा रोपण एवं बीज बौने के लिए तैयार करना।
- बकरियों के बीमा के लिए बीमा कम्पनी का तैयार न होना
- समूहों का बैंक खाता।

  हमारा मनना है कि यह समस्याऐं अगर नही आती तो शायद हमने इस परियोजना से जो सीखा है वे हम सीख नही पाते।इन चुनौतियों ने हमें और मजबूत बना दिया है। अब हम कठिन से कठिन कार्य बखूबी कर सकतें है।

कलस्टर लेवल कार्यशाला
(SHG / GRH)
20 09 2014 13:39

20 09 2014 13:33

ग्राम विकास की कुंजी महिला
नर-नारी एक समान।
02.12.2013 12:23